रिकॉर्डः–लाख जमाने वाले, डाले दिलों पे ताले, तुम भी न भूलो बालम, हम भी न भूलें। दिल की लगी पे देखो आँच न आए, जान रहे कि जाए, प्यार न जाए.....
ओमशांति। बच्चे कहते हैं कि कोई भी हमको संशयबुद्धि बनाने के लिए कुछ भी करे, ये बच्चे कहते हैं कि हम गैरंटी करते हैं– कोई भी हमको उल्टी–सुल्टी बताएँगे तो हम संशयबुद्धि नहीं बनेंगे। एक दफ़ा जब निश्चयबुद्धि बने तो जो भी बाबा कहेंगे, जो भी श्रीमत कहेंगे, हम उस मत पर चलते रहेंगे। देखो, बाबा अभी रोज़ समझाते रहते हैं ना सब बात में। अभी बच्चों को समझाया गया था कि जो चित्र हैं, उनमें जो कलहयुग का यहाँ अंत में दिखलाया हुआ है, तो उनमें लिखना कि सभी के पास जो चित्र हैं और जो ये गोला है 5000 ये कल्प का, तो उसमें लिख देना, कलहयुग में, तो वहाँ 500 कि 600 करोड़ होते हैं और सतयुग में 9 लाख होते हैं। अभी ये लिख देना उनमें कि कलहयुग के अंत में हैं 600 करोड़; वहाँ सतयुग में हैं 9 लाख। तो बच्चों को कह दिया था कि यहाँ जो कुछ भी चित्र हैं वा जिस–2 के पास चित्र हैं, वहाँ ऊपर में लिख देना कि कलहयुग के अंत में हैं 6(00) करोड़ या साढ़े 5(00) करोड़, कितना भी करोड़, इसमें कोई हर्जा नहीं है और सतयुग में, वहाँ लिख दो– 9 लाख। तो मनुष्य समझ जाए कि बरोबर विनाश तो होना ही है। तो कितना विनाश होता है! भारी विनाश होता है ना बच्चों। तो ये भारी विनाश सिवाय इस महाभारी महाभारत लड़ाई, जो 5000 बरस पहले भी हुई थी, वो ज़रूर होने की है। तो बच्चों को भी बुद्धि में चाहिए समझने की; क्योंकि लिखना चाहिए, जब लिखी जाती है तो पढ़ी जाती है, पढ़ी जाती है तो बुद्धि में याद होती है समझाने के लिए किसको भी। तो प्रदर्शनी में भी जो चित्र हैं, तो उसमें अगर मनुष्य लिखेंगे कि ये 600 करोड़ इस समय में मनुष्य हैं; क्योंकि कलहयुग का अंत है और सतयुग में, बरोबर गोल्डन एज या नई दुनिया में थीं 9 लाख। तो फिर इतने सब मनुष्यों का क्या हाल होगा! मनुष्य होंगे, ये सभी उनके मकान होंगे, शहर होंगे, धर्म होंगे, तो ज़रूर विनाश होंगे। तो देखने से ही जो बुद्धिवान मनुष्य होगा, थोड़ा भी इशारा करेंगे तो समझ जाएँगे। बरोबर ये एक ही लड़ाई है, जिससे अनेक धर्म विनाश हो, फिर आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना होगी। ज़रूर जो देवी–देवता धर्म की स्थापनायें होंगी, ज़रूर वो लायक बनते होंगे। उनको मनुष्य से देवता बनते(बनाते) होंगे। अभी मनुष्य से देवता तो बाप बिगर कोई बन(बना) नहीं सकते हैं। तो ये याद चाहिए ना बच्ची। बच्चों को बुद्धि में याद चाहिए। क्यों? बाप जानते हैं कि हम अनेक प्रकार की बुद्धि को समझाते हैं कि बच्चे अच्छा, 84 जन्म की भी यादगार बनेंगे। तो भी समझेंगे कि हाँ, अभी तो हमको घर जाना है। फिर अपने राजधानी में जाना है। तो वो याद पड़े; क्योंकि घड़ी–2 माया भुलाय देती है इन सब बातों को। चलते–2 यहाँ से ही सुनेंगे, बाबा सुनाएँगे ना अभी, अभी यहाँ से घर जाएँगे यहाँ, तो ये जो नशा चढ़ा हुआ रहता है कि अभी विनाश तो सामने खड़ा है, तो इसीलिए हमको बाप को याद करना है, जो हम सतोप्रधान बन जाएँ। अभी देरी तो नहीं है। बाकी है ही कितना थोड़ा समय। कोई भी समय में, देखते भी हैं, सुनते भी हैं कि बरोबर कोई–न–कोई समय में लड़ाई बड़ी भी हो जावे। कहते भी हैं कि शायद ऐसी भी लड़ाई हो जावे, जो बहुत बड़ी भारी लड़ाई हो जावे, जो फिर बंद भी नहीं हो सके। बंद तो होनी है ना ऐसे। अभी तो कोशिश करते हैं कोई भी कि भई, कोई लड़ाई लगी हुई है, तो उनको कोई–न–कोई बंद कराय देवें, नहीं तो सभी एक/दो में लड़ मरेंगे। तो उसमें लगाया होगा तो मनुष्य समझ जाएँगे कि लड़ाई तो ज़रूर होगी, विनाश तो ज़रूर होगा। इसके लिए इसके पहले क्यों न बच्चे अपने याद में रह करके, जो तमोप्रधान बच्चे होते हैं, वो सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करें। नहीं तो घड़ी–2 भूल जाते हैं। घड़ी–2 ये नॉलेज सुनते नहीं, भूल जाते

हैं। न खुद पढ़ते हैं, न कोई को भी समझाय सकते हैं; क्योंकि सर्विस तो करनी है ना। बच्चों को समझाना है कि विनाश सामने खड़ा है। उस विनाश के पहले अपन को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाना है। सतोप्रधान बनने के लिए, योग/याद की यात्रा में ये माया बड़ी विघ्न डालती है। ये बच्चे जानते भी हैं, समझते भी हैं, कहते भी हैं। रोज़ बाबा कहते हैं बच्चों को कि थोड़ा–बहुत अपने पास अपना चार्ट बनाओ। लिखते हैं कोई–कोई। तो समझो तो कौन लिखते हैं, कोई एक या दो या तीन लिखते हैं। इतने बच्चे हैं, कोई तीन (...); क्योंकि बिचारे धंधे–धोरी में, वो बिचारे सारा दिन वहाँ ही पड़े रहते हैं। अनेक प्रकार के माया के विघ्न डालते हैं– कोई किस काम में, कोई किस काम में, कोई किस धंधे में। अभी है तो कहाँ भी रह सकते हैं। एक बार जब बच्चों को ये मालूम पड़ा, हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है हर एक को, हर एक को पुरुषार्थ करना है, पीछे कहाँ भी जाएँ, कहाँ भी रहें, कहाँ भी जा करके पुरुषार्थ करें। कोई सतसंग में बैठ करके, कोई जा करके पुरुषार्थ नहीं करना है। नहीं, घर में भी, धंधे में, धोरी में, हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है। औरों के लिए ये प्रबंध भी देखो कर रहे हैं, चित्र भी बनाय रहे हैं, लिखाते भी हैं। ये सीढ़ी भी देखो अभी नए किस्म से बनाय रही हैं बड़ी अच्छी। तो बच्चों को अच्छी बुद्धि चाहिए ये सब काम करने के लिए। बच्ची, ये जो नॉलेज है ना, ये सब विलायत में भी जानी चाहिए; क्योंकि बच्चे तो हैं ना। बच्चों को मालूम तो होना पड़े ना कि हमको अभी तमोप्रधान से (...)। सब तमोप्रधान हैं मनुष्य। एक भी मनुष्य नहीं है जिनको ये मालूम है कि सारी दुनिया के मनुष्य मात्र बिल्कुल ही तमोप्रधान हैं, 100 परसेन्ट तमोप्रधान हैं। अभी सतोप्रधान 100 परसेन्ट सबको बनना है और फिर सबको बनना है सतोप्रधान; क्योंकि पहले–2 हर एक मनुष्य जब आते हैं वहाँ से, अपने मुक्तिधाम से, जब जीवनमुक्तिधाम में आना होता है तो उनको पहले–2 सतोप्रधान, पीछे सतो,रजो,तमो ये ज़रूर करना है। इसीलिए सभी मनुष्य मात्र को अपन को सतोप्रधान बनाना ही है; क्यों(कि) इस समय में सभी तमोप्रधान हैं नम्बरवार। भले पहले देवताएँ, वो–3 सब। तो सब जो भी धर्म वाले हैं, सबको ये पैगाम देना है कि बाप को याद करने से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। तो देखो, एक ही सिर्फ ये जो चक्कर लगाया हुआ है, ये कलहयुग और सतयुग। कलहयुग के अंत में, एकदम ठक लिख देते हैं कि भई इतने हैं, इसमें इतने हैं और सामने विनाश खड़ा हुआ है। तो बच्चों को बुद्धि में मालूम तो पड़ेगा ना बच्चे सबको कि अभी मौत तो सामने है ही है। ये कोई नई बात नहीं है। ये महाभारी महाभारत की लड़ाई लगी थी और बरोबर सतयुग में सिर्फ एक धर्म था और बहुत थोड़े मनुष्य थे। बाकी सभी आत्माएँ शांतिधाम में जा करके निवास करती थीं। तो सब मनुष्य मात्र दुख से लिबरेट हो जाते थे। ये रावण राज्य से सभी बिचारे छूट जाते हैं... या शांतिधाम में जाकर ये रहते हैं। पीछे वो आएँगे तो सतोप्रधान में ही आ करके रहेंगे। तो बाप कहते हैं कि ये सभी बच्चों को ये चित्रों के ऊपर भी बड़ा अच्छा अटेन्शन देना पड़ेगा। इसलिए ये जो सीढ़ी बनाई गई है, ये जो अभी छोटा भी आया है ना, सैम्पल बनकर आया है। बच्ची को बोला था ना रात को। किसको बोला था, एक बच्ची? (किसी ने कहा– सन्तोष, संतोषी) हाँ, किसको कहा था? ये इनको भी कहा था, शायद ये जो बच्ची है कि इसमें जो–2 भी भूल होवे, ..तो लिख करके हमको देना। तो ये तो ले जाएँगे बच्चा अपनी छोटी; क्योंकि बहुत छोटी है। ये छोटी से इतना कुछ पूरा नहीं समझ सकेंगे, बड़ा चित्र चाहिए; क्योंकि हर एक चित्र कम–से–कम 6×4 में होने से अच्छी तरह से मनुष्य समझ सकते हैं। छोटे में एक को बैठ करके समझाने के(से), तो एक समझ सकेंगे। बड़ा होगा, तो 6 खड़े होंगे ना, तो उनको समझाने से कि छः कर–करके समझ जाएँगे; क्योंकि उनको देखना भी होता है

ना चित्र में कि बरोबर (...)। तो ये छोटे–2 अक्षरों में (...) ये तो हुआ– एक को बैठ करके समझाएँगे। बुलाय करके कोई को– भई देखो, ये अभी तमोप्रधान हो गए हैं। सतोप्रधान बनना है। अभी बाप आ करके कहते हैं और अभी बाप को याद करो, तो सतोप्रधान बन जाएँगे। अभी तमोप्रधान हो; क्योंकि मूल बात तो बच्ची ये है ना– मन्मनाभव का जो अक्षर है, जो ये मुख्य– अल्फ और बे। अक्षर तो बहुत सहज हैं ना। तो मेहनत तो बहुत करनी पड़ती है। अभी जो ये प्रदर्शनी इतनी–2 सब होती रहती हैं, देखो कितने–2 मनुष्य आते हैं, तो उनमें भी बच्चियाँ नम्बरवार हैं समझाने वाली। तो योगी भी बहुत अच्छी चाहिए। बाप से भी लव होना चाहिए उनको। तो बाबा की हम सर्विस कर रहे हैं, बाबा के खिजमत(खिदमत)गार बने हैं अर्थात् बाबा सर्विस कर रहे हैं, हम बच्चों को भी अभी सर्विस करनी है, उसको कहा ही जाता है– खुदाई(...)। देखो, अक्षर तो बहुत हैं, जाकर मुसलमानों ने अपने हाथ में अक्षर दिखलाए हैं– भई खुदाई खिजमतगार। अभी वो ठीक समझते हैं, खुदाई खिजमतगार बनना है, पर अर्थ तो वो भी नहीं समझते हैं। अभी सच्चे–2 तो खुदाई खिजमतगार तुम हो बरोबर; क्योंकि बाप आए हुए हैं खिजमत करने। ....इतना पुरुषोत्तम तुम बन रहे हो। ये तो तुम बच्चों को बुद्धि में आना चाहिए कि हम अभी जो मोहताज हैं, कंगाल, एक पाई का भी वर्थ नहीं है एकदम। ये मनुष्यों को इस समय में जो कुछ चाहिए सो कह सकते हैं– भंगी कहो, मेहतर कहो, बन्दर कहो, जो कुछ चाहिए सो हैं और मनुष्य समझते तो हैं नहीं कोई भी। तुम बैठ करके समझाते हो कि यहाँ भारत में कितना ये सुख था! कोई दुख का नाम–निशान नहीं है। सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी। अभी मनुष्य देखो कैसा है! देखने में तो बड़े मनुष्य हैं ना। जैसे प्रेजीडेण्ट है, फलाना है, देखो कितने बड़े–2 आदमी आते हैं। अभी वो बिचारे क्या हैं! तुम जानते हो कि वो क्या करते हैं बिचारे, लड़ते हैं, झगड़ते हैं। उनको ये मालूम ही नहीं कि लड़ाई लगनी है, मरना ज़रूर है सबको। ये...समझते थोड़े ही हैं। वो समझते हैं कि नहीं, ये शांति हो जाएगी, फलाना हो जाएगी। तो उन बिचारों को तो कुछ पता ही नहीं पड़ता है ना। बिल्कुल उंध अंधुकार में हैं। तो उनको समझाने का (...)। तो बहुत चाहिए ना समझाने वाले भी। कोई सब तो नहीं समझेंगे ना। जैसे देखो, अपना वो गया हुआ है अभी विलायत में, ये जो विलायत गए हैं, क्या नाम उसका? (किसी ने कहा– माथूर) माथूर, वो जो दिल्ली वाला है। हाँ! अभी वो विलायत में गया है चक्कर। अभी उसके पास ये भी है। हाँ, प्रोजेक्टर। अभी प्रोजेक्टर भी है उनको। अभी वो...कहाँ–2 मुश्किल बैठ करके ये ले जो गया है प्रोजेक्टर और उनके साथ ये भी ले गए हैं बॉम्बे से। (किसी ने कहा– स्लाइडर्स) स्लाइड्स भी ले गए हैं। अभी वो क्या सर्विस करते हैं, अभी तलक तो कुछ पता नहीं; परन्तु एक भी अगर बात बैठ करके कहाँ समझावे, कोई संगठन में या कोई भी इन्फॉर्म करके कि मुझे यह समझाना है, गैदरिंग करनी है और उनको बैठ करके ये सिर्फ बीच वाला जो है, उनको समझावें कि देखो, अभी कलहयुग है। अभी ये छः/सात सौ करोड़ मनुष्य हैं और यहाँ न्यू वर्ल्ड में, जहाँ डीटी वर्ल्ड होती है, जिसको हैविन कहा जाता है, उनमें तो मनुष्य ही थोड़े होंगे; क्योंकि एक ही धर्म, सो भी नया, उनमें कितना होंगे? होंगे बहुत–2 करके, लॉ कहता है, बाप ने समझाया है कि 9 लाख/10 लाख होते हैं। अभी ये तुम समझते नहीं हो कि विनाश तो ज़रूर होगा; क्योंकि ये महाभारी महाभारत लड़ाई तो नामी–ग्रामी है कि बरोबर बड़ी लड़ाई लगी थी, जिसमें ये सभी खतम हो, बाकी ये धर्म स्थापना होते हैं। तो ज़रूर गॉड फादर यहाँ है। वही बैठ करके ब्रह्मा द्वारा स्थापना (...)। फिर चित्र देखे, दिखलावे है ना। चित्र द्वारा, ब्रह्मा द्वारा ये स्वर्ग की स्थापना हो रही है। फिर इन शंकर द्वारा ये देखो विनाश होता है ये कलहयुग का; क्योंकि ये संगम है अभी। तो

ये तो समझना चाहिए ना कि बरोबर विनाश ज़रूर होना चाहिए। नैचुरल कैलेमिटीज़ भी होती है। ये तो वर्ल्ड वॉर, द लास्ट वॉर, ये थर्ड नम्बर वॉर...; क्योंकि ये है अभी बड़े–ते–बड़ी लड़ाई। भले इनकी रिहर्सल भी हो; परन्तु फाइनल तो होना ही है ना बच्ची। कोई जास्ती तो टाइम अभी है नहीं। बॉम्ब्स तो अभी बनाते रहते हैं सभी। ढेर–के–ढेर तो बन रहे हैं। सब कहते भी हैं कि हम 1,2,4,5 भी खोलेंगे, सब खतम हो जाएँगे। तो विनाश तो है ना। तो फिर सबको कहना पड़े कि इस समय में सबको बाप को याद करना पड़े। तो बाप को याद करने से मुक्तिधाम मिलेगा, ऊँचे–ते–ऊँच पद पाएँगे। भले हर एक अपने धर्म में रह करके, देह सहित देह के संबंध को छोड़ अपन को आत्मा समझ और बाप को याद करना है। तो बाप से वर्सा मिल सकता है। फिर जो–2 याद करें, वो अपने–2 धर्म में अच्छा वर्सा ले सकते हैं। तो सभी को ये योग तो सिखलाना पड़े ना बच्ची। ये प्राचीन भारत का योग, जो बाप ने समझाया है, वो तो तुम बच्चे ही जानते हो। साधु–संत–संन्यासी लोग तो वहाँ जा करके ठगते हैं सबको। तो वहाँ जाने से सबको मालूम पड़ेगा कि बरोबर ये राजयोग (...), अभी ये जो विनाश हो रहा है, इस समय में अभी भगवान है, बाप है और वो एडम के शरीर में, प्रजापिता ब्रह्मा के तन में बैठ करके ये नॉलेज दे रहे हैं। ....समझाना पड़े ना...। तो सारा दिन ये खयालात रहे ना सर्विस का कि हमको सर्विस तो करनी है। भले चैरिटी बिगन्स एट होम, फिर चैरिटी बिगन्स अपने शहरों को/गाँव को, फिर चैरिटी बिगन्स एट आस–पास, पीछे चैरिटी बिगन्स सब और धर्मों को। सबको तो बाबा का परिचय तो देना है कि बाप आए हुए हैं। टाइम तो लगे ना बच्ची। सबको देना है नम्बरवार। बाप ने समझाया है कि आस्ते–2, पीछे राजाओं को भी, फिर संन्यासियों को... फिर बाहर वाले जो हैं उनको भी, उनके लिए युक्ति रचनी चाहिए, उनके लिए तैयारी करनी चाहिए। क्या तैयारी करें? बाप कहते हैं कि ये जो चित्र हैं, ये जो बाप बनाते हैं, ये कपड़े ऊपर छप जावें तो बहुत अच्छा। अच्छा, क्या हर्जा नहीं है। चलो, दो टुकड़ा, इतना बड़ा नहीं छपते हैं, दो छपाय कर–करके और फिर सिलाई करके भी पर्दा छप सकते हैं। तो कहाँ विलायत के तरफ में जा करके और समझाय भी सकें। प्रोजेक्टर के ऊपर भी समझा सकते हैं तो उनके ऊपर (...)। सबसे मुख्य है ही ये झाड़, जो पहले नम्बर में निकला हुआ है। ये त्रिमूर्ति और ये झाड़– ये दोनों। त्रिमूर्ति और झाड़– ये हैं सबसे मुख्य। पहले नम्बर में ये बनवाया हुआ है ना बच्चे। सारा ज्ञान इसमें है। सीढ़ी का भी ज्ञान इसमें है। ऐसे नहीं (कि) नहीं है। उसमें फिर डिटेल से बनाया हुआ है सीढ़ी को कि 84 जन्म कैसे? इसमें भी 84 जन्म लगा हुआ है, कोई न नहीं है। इस चक्कर में लगा हुआ है कि भई, सतयुग में इतने, त्रेता में इतने, द्वापर में इतने, कलहयुग में इतने। सीढ़ी में भी तो ऐसे ही लगा हुआ है। उसमें है सीढ़ी बताने की कि भई, 84 जन्म की सीढ़ी उतरती कैसी है। भई ऊपर में सतोप्रधान, सतो,रजो,तमो, फिर चले जाते हैं तमोप्रधान। ये उतरती कला। अभी फिर दिखलाते हैं– मन्मनाभव। अपने बाप को याद करो तो ये बनेगा। तो सीढ़ी भी तो अभी बन गई है। अभी सीढ़ी भी तो ज़रूर इतनी बड़ी बनानी चाहिए। समझा ना! बाबा तो कहते रहते हैं कि कहाँ भी (...)। अभी ये तो हो गया मकान। ये तो बन गया। अभी नॉलेज मिल तो रही ना। अभी कोई बड़ा मकान बनावें, नया मकान बनावें, नया हॉल बनावें, जिसमें ये 9×6 चाहिए। तो 9×6 ऊँचाई तो ठीक हो गई। अभी 6 और 6 = 12। 12 फुट की दीवार चाहिए। समझा ना! जब मकान बनाना पड़े। तो देखो, बाबा को विचार होता रहता है कि अभी जमीन मिल जावे कहाँ भी, बच्चे ले लेवे। तो अभी ऐसे मकान बनाना चाहिए जिसमें झाड़ और गोला एक जगह में।...दूसरी जगह में भी इतना बड़ा–2 दीवार रखनी चाहिए, जो फिर अंग्रेजी, फिर हिन्दी, फिर कोई उर्दू; क्योंकि बहुत लैंग्वेज़िस हैं ना

बच्ची। ...सर्विस का ख्याल रहता है बच्चों को कि ये–2 सब कुछ करना है। सर्विस बहुत हम लोग को करनी है। सारी दुनिया का, सब धर्म वालों(वाले) हैं, उनको बैठ करके समझाना है। कितनी लैंग्वेज़िस में ये सब कुछ बनना है; क्योंकि यहाँ लैंग्वेज़िस तो जानते हैं ना। देखो, वहाँ जो दिल्ली है, उनमें जभी वो बताते हैं तो बहुत लैंग्वेज़िस में। आते हैं ना भिन्न–2 प्रकार के, भिन्न–2 लैंगविज़ में। जब भाषण होते हैं तो भिन्न–2 लैंगवेज़ में वो प्रबंध हैं, जो बैठ करके समझते हैं। ऐसे है ना बरोबर। तो ये सभी बुद्धि में, इतनी विशाल बुद्धि चाहिए, जो वहाँ भी समझ करके, सब बातें समझ करके, ऐसी कोई युक्ति रचनी चाहिए जो एक बैठकर समझावे, तो सब भाषाएँ वाला, वो बैठ करके समझावें, तो सभी नेशन वाले इस बात को समझ जावें। है ना! सर्विस का ख्याल कितना बड़ा–2 लम्बा–चौड़ा रखते हैं। तो वो सब कुछ करने का प्रबंध करना चाहिए ना। आस्ते–2, धीरे–4 तो चलना ही है; परन्तु बच्चों को सर्विस का शौक चाहिए–ये करना चाहिए। ये अगर पर्दा भी लगाएँगे; क्योंकि बाप कहते हैं– तुम आमदनी भी कर सकते हो और खर्चा भी कर सकते हो। भीख माँगने की कोई दरकार नहीं है। तो ये चित्र जो हैं– झाड़, गोला और सीढ़ी। ये अभी मुख्य हो गए हैं। और भी जो कोई 5–6 मुख्य चित्र होते हैं, क्यों न इनको कपड़े पर छपाय लेवें, जो फटे–टूटे भी नहीं और किसको भी जा करके समझावें। एक लैंगवेज़ में छप गए– हिन्दी–इंगलिश में। तो इंगलिश में फिर और ही बहुत मिलेंगे, जो बैठ करके अपनी कॉपी बनाएँगे। तो जल्दी–2 सर्विस लगेंगे। तो बड़ी सर्विस पर ध्यान देना चाहिए ना बच्चे। जो इस ज्ञान से वाक़िफ़ है वो उस ज्ञान को जा करके पकड़ें; क्योंकि हल्का काम हल्के करेंगे, ऊँचा काम ऊँचा करेंगे। तो किसको (...) जिसको अकल है ये सब कुछ बनाने का कि भई, हम कपड़े पर जा करके छपावें। कहाँ तक ये छपाते रहेंगे! कपड़े पर छपाने के, हज़ार छप गया, अच्छा! खर्चा होगा। चलो, दो/तीन कपड़े ... छपाएँगे, लाख, सवा डेढ़ ही लाख। कोई देरी तो है नहीं। छपाने में देरी नहीं होगी। बाप कहते हैं ना, कोई बनाने वाला चाहिए। जो खर्चा का काम होगा, वो आपे ही हुण्डी भर जाएगी; क्योंकि ड्रामा में नूँध है। बाप बैठकर समझाते, ड्रामा में नूँध है। सब कुछ हो सकेगा। तो बच्चों को बहुत अच्छी बुद्धि चाहिए। ज्ञान चाहिए। तो बच्चों को, जो अनन्य अपन को समझते हैं, वो तो इनको बड़ा–2 काम। समझा ना! क्योंकि ऊँचे काम करने वाले ऊँचे काम करेंगे ना बच्चे। प्रेजीडेन्ट, प्रेजीडेन्ट का काम करेगा; प्राइममिनिस्टर, प्राइममिनिस्टर का; कलेक्टर, कलेक्टर का काम करेगा; फलाना ये इसको क्या बोलते हैं, छोटे ऑफिसर, वो अपना काम करेगा। तो जो अपन को महारथी समझते हैं, उनको बहुत बड़ा काम करना चाहिए ना। ऊँचे–ते–ऊँचा काम की मदद करनी चाहिए ना– तो बाबा, हाँ, हम ऐसे चित्र, हम बहुत अच्छे–2 ये (...) कारीगर तो बहुत अच्छे–2 बने हुए हैं। तो जा करके, अच्छी तरह से लगाय करके, बाबा के पास कोई ऐसी चीज़ बनाकर आवें, तो बाबा खुश भी होते जावे। बाबा आफरीन करे बच्चों को कि बच्चे देखो, ये चित्र बनाया, बहुतों का कल्याण हो जाएगा। तो सारा दिन सर्विस में लगा रहना, बाबा को तो वो पसंद आएगा। बाकी तो बाबा समझते हैं, बहुत आते हैं, ढेर प्रदर्शनी में आते हैं, वो तो बहुत उनमें से प्रजा बनती जाती है। .....तो बच्चों को तो समझाने के लिए सब कुछ अच्छी तरह से समझना चाहिए। सीढ़ी पर भी अच्छी तरह से बैठ करके समझना चाहिए, जो बैठकर, जब घर में कोई आए, तो उनको बैठ करके समझाना चाहिए। अभी देखो, अभी तुमको मन्मनाभव, बाप को याद करना है। अभी ये जो डबल ताज, ये भी तो मशहूर है ना बच्ची। इस समय में कोई को भी ताज, सो पवित्रता का ताज, जो किसमें है ही नहीं। कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं है, जिसके फोटो के ऊपर हम लाइट का ताज दे सकें। एक

भी नहीं है बिल्कुल ही और ये तो सभी, जगद्गुरु को तो सभी दे देते हैं। देखो, अभी अपन को भी नहीं देते हैं। अपना फिर डिफीकल्ट है। अभी इस समय में पतित तो हैं। लाइट तो है नहीं। अच्छा, हम लाइट के लिए तपस्या तो करते हैं ज़रूर। ठीक है ना बच्ची। अच्छा! अभी ये लाइट हम कब दिखलावें अपन को? क्योंकि सिंगल ताज तो हमको यहाँ बनना है ना, लाइट का, प्योर। शरीर तो प्योर नहीं होते हैं, आत्मा तो प्योर होती है ना। तो योगबल से हम प्योर बनते हैं। फिर जब हमारी पिछाड़ी की अवस्था होती है, तो हम प्योर बन जाते हैं। ठीक है ना! उस समय में ताज तो नहीं है ना। ताज तो सतयुग में मिलेगा। अभी हमारी प्युरिटी भी तो मालूम होनी चाहिए ना। सतयुग में हम बनते हैं प्योरिटी की और डबल ताज। अभी यहाँ तो कोई भी ताज नहीं है और भक्तिमार्ग में सिंगल ताज। अभी सिर्फ प्योरिटी–ताज हम कहाँ दिखलावें! वो भी तो दिखलाना पड़े ना बच्ची। .....जब हम बैठते हैं और जब हम पवित्र हैं अगर, तो फिर हम अपना लाइट बताय सकते हैं कि हम प्योर हैं। लाइट प्योरिटी; क्योंकि प्योरिटी है ना। तो प्योरिटी कहाँ रखें? ये लाइट अपन को कहाँ दिखलावें? तो लाइट तो रहती है पिछाड़ी को। इस समय में हम फुल प्योरिटी में तो आए ही नहीं हैं। कुछ–न–कुछ गड़बड़, प्योर तो हैं। ऐसा नहीं है कि कोई विकार में जाते हैं। नहीं, प्योर तो हैं ज़रूर; परन्तु कम्प्लीट प्योर जब (...) जाते हैं तभी हमारे को लाइट होनी चाहिए। वो कहाँ दिखलावें? तो जब सूक्ष्मवतन दिखलावे, उसमें लाइट दिखलावें; क्योंकि सूक्ष्मवतन में, तो बरोबर जैसे अभी मम्मा गई, तो वो सूक्ष्मवतन में। सूक्ष्मवतन में प्योर है ना बच्चे। अभी सूक्ष्मवतन में प्योर हैं, फरिश्ते हो, प्योर हो। उसमें सिंगल ताज है। पर जब सतयुग में होंगे तब डबल ताज होएगा। है ना! तो सूक्ष्म में, अभी सूक्ष्मवतन में तो कहाँ किसको हम दिखलावें? तो हमको पिछाड़ी में लाइट तो कोई दिखलानी (तो) चाहिए ना मनुष्यों को। तो सूक्ष्मवतन (में) हम कैसे दिखलावें? तो ये विचार की बात होती है ना कि हम प्योर तो बनते हैं ना बरोबर। सिंगल ताज वाले तो बनते हैं ना। तो सिंगल ताज तो हम बनते हैं जभी सूक्ष्मवतन में होते हैं। जैसे अभी मम्मा है, तो सिंगल लाइट वाली है। लाइट है और सूक्ष्म शरीर भी है। डबल ताज तो वहाँ नहीं हैं,...जब यहाँ आएँगे तब डबल ताज होगा। प्योरिटी भी है और ताज भी है और यहाँ तो कोई भी ताज भी नहीं है। ताज वो जो था, वो भी अभी खतम हो गया। राजाओं में ताज था, लाइट नहीं थी, प्युरिटी नहीं थी। अभी प्युरिटी कहाँ हो? तो प्युरिटी होती है पिछाड़ी में। जब कहा जाता है कि अतिइन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप–गोपियों को, वो पिछाड़ी में एकदम। सो भी तो यहाँ दिखलानी होती है ना। तो सूक्ष्मवतन में, ये अभी सूक्ष्मवतन में कहाँ दिखलावें? तो देखो, विचार चलता है कि कैसे इनको समझावें कि लाइट का ताज, प्योरिटी .....हम कहाँ दिखलावें इनको? ये दिखलाते हैं ना ये जहाँ हम योग में बैठे हैं तो हमारे ऊपर टाइट रखते हैं। तो वो हम लाइट वाला बनते हैं; परन्तु देखने में आता है कि ये बच्चे बैठते हैं, योग में रहते हैं; परन्तु आज लाइट है, कल फिर पतित बन जाते हैं, लाइट उड़ जाती है उनकी प्युरिटी की। तो देखो, ये खयालात चलती है ना कि प्लैन भी बनावें तो प्योरिटी, सिंगल प्योरिटी, बाकी प्योरिटी का ताज कहाँ बनावें? वो तो फिर हो जाते हैं पिछाड़ी में। जभी कर्मातीत अवस्था को पहुँचेंगे तब नम्बरवार, सो भी 108 का जो ऊपर वाला होगा ना, वो प्योरिटी बनेगा। बाकी तो सज़ा खाकर प्योरिटी बनेंगे।

ज्ञान के सागर ...., वफादार, फरमानबरदार बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग।